कर्नाटक के लोकगीतों में स्वतंत्रता सेनानियों का गुणगान

डॉ॰ अनुपमा तिवारी
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी
अलायंस विश्वविद्यालय, बंगलोर
फोन – 8886995593/8142623426
ईमेल – anutosh.tiwari82@gmail.com

भारत को स्वतन्त्रता दिलाने के लिये लाखों – करोड़ों लोगों ने अपनी प्राणों की बाजी लगाकर देश को अंग्रेज़ मुक्त किया और यह भी साबित किया कि भारत भूमि वीरों से च्युत नहीं है। मिट्टी बलिदान मांगती है, रक्त से खुद को सींचती है, जितनी बार खून की नदियां देश के लिए प्लावित होती हैं उतनी बार एक नया इतिहास रचा जाता है। अनगिनत ऐसे योद्धा और वीर जाबाजों ने देश के लिए बलिदान दिया जिनका नाम गुमनाम रह गया। उनका नाम भले ही भारत के इतिहास के स्वर्ण पृष्ठों पर अंकित होने से छूट गया हो परंतु अपने स्थानीय लोगों के वे अमर नायक आज भी हैं। जिस समय देश को आजादी दिलाने का संघर्ष चल रहा था उन दिनों लोगों को उत्साहित करने जज़्बा भरने का एक माध्यम जहां कविता रही वहीं दूसरा सशक्त माध्यम लोकगीत भी रहा। कर्नाटक राज्य में लोकगीत के माध्यम से गाँव गाँव तक युद्ध के किस्से सुनाये जाते थे और वीर योद्धाओं के गुणों व साहस से अवगत कराया जाता था। आज भी इन्हीं गीतों को गाया और गुनगुनाया जाता है जिससे हमारी वर्तमान पीढ़ी उस समय की परिस्थिति से परिचित हो पाती है। इस लेख में कर्नाटक के उन्हीं गीतों का उल्लेख किया गया है।

लोकगीत विरासत में मिली संपत्ति है, जिसमें प्राचीन परम्पराओं, मान्यताओं तथा विश्वासों की जानकारी मिलती है। यह लिखित या प्रामाणिक रूप में प्राप्य नहीं होता अपितु, मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाई जाती है। इस मौखिक परंपरा में इतना विश्वास होता है कि इसके समक्ष शास्त्रीय परंपरा की प्रामाणिकता भी कभी कभी फीकी लगाने लगती है। इस संदर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने भी लिखा कि – "जब पंडितों की काव्य भाषा स्थिर होकर उत्तरोत्तर आगे बढ़ती हुई लोकभाषा से दूर पड़ जाती है और जनता के हृदय पर प्रभाव डालने की उसकी शक्ति क्षीण होने लगती है तब शिष्ट समुदाय लोकभाषा का सहारा लेकर अपनी काव्य परंपरा में नया जीवन डालता है।"1 लोकगीत अपने अंचल में अपने समय के समाज, साहित्य, संस्कार, रीति – रिवाज को समेटे रहता है और हर प्रकार की जानकारी हमें प्रदत्त करता है। दक्षिण भारत के लोकगीत भी इसी परंपरा का निर्वहन करते हैं। दक्षिण भारत के लोकगीतों में विषय वैविध्य रहता है। हर प्रकार के गीत मिलते हैं। इसी में आजादी की गाथा भी मिलती है। कर्नाटक में रानी लक्ष्मीबाई के संदर्भ में एक बहुत ही सुंदर गीत है –

"भारतीय स्वातंत्र रणाग्रणी सिंहणी झान्सिय राणियनु।

गौरवगोलिसिरि ब्राह्मण कुलमणि क्षत्रिणि लक्ष्मीबायियनु॥

नीति निरत प्रभूवेणिसिद गंगाधरराव पत्नी समेतदलि।

घातकतनदोलु हिन्दी राजयगढ़ गेद्द ब्रिटीशर नेल्ललीननी॥

स्वातंत्रद सुखदानंददि तन् प्रजेगल क्षेमदोलिरि सुतलि।

पातकवलिसुव कौतुक मार्गदि राज्य वाडुतिह समयदली॥"2

महारानी लक्ष्मीबाई की वीरता, शौर्यता, निर्भीकता की किर्ति न केवल वर्तमान में अपितु युगों युगों तक गायी जाती रहेगी। उपर्युक्त उल्लिखित कन्नड लोकगीत में झांसी की रानी के बारे में बताया गया है कि – क्षत्रिय कुल को गौरवान्वित करने वाली, झांसी की रानी भारत को स्वतन्त्रता दिलाने के लिए रणक्षेत्र में सिंहणी का रूप धरती हैं। हिन्दी राजगढ़ अर्थात हिन्द भारत के प्रभुत्व को बनाए रखने वाली गंगाधर राव की पत्नी झांसी की रानी अंग्रेजों के लिए घातक थीं। कौतुक के साथ राज्य का संचालन करते हुये रानी अपने प्रजागण को बहुभांति से सुख शांति देते हुये आजाद रखती हैं। इस प्रकार यह गीत स्पष्ट करता है कि लक्ष्मीबाई के

संदर्भ में जहां हिन्दी साहित्य में अनेकश: कवितायें, कहानियाँ लिखी गईं वहीं दक्षिण भारत में उस वीरांगना के संदर्भ में लोकगीत प्रचलित थे। अशिक्षित और भोली जनता को इन गीतों के माध्यम से रानी का परिचय प्राप्त होता था। रानी लक्ष्मीबाई की ही तरह कर्नाटक में रानी चेन्नम्मा का नाम अमर है। **" कन्नड नाड़ीना हेम्मेय महीड़ेयू**

नेच्चिना केच्चिना चेन्नम्मा

मल्लसर्जननू मेच्चिद सर्जन कीरीय

अरसीयू चेन्नम्मा।

ब्रिटिशर काएडेय गाड़ीगे

तूरीद साहस राणीयू चेन्नम्मा।

ध्याकरे गोरीय तोड़ीय धीरड़ू

गंडेदे मीटिद चेन्नम्मा।" 3

अर्थात कर्नाटक की गर्व स्वरूप एक ओजस्वी और वीर महिला हैं रानी चेन्नम्मा। वह शौर्यता, वीरता,और कर्मठता में बड़े बड़े योद्धाओं को टक्कर देने वाली हैं। मल्लसर्ज रानी चेन्नम्मा के पति थे। बेलगावी ग्राम में जन्म लेने रानी को कर्नाटक की लक्ष्मीबाई माना जाता है। दत्तक पुत्र को राजगद्दी पर बैठाकर अंग्रेजों से रानी चेन्नम्मा ने देश के लिए संघर्ष किया। उनकी वेरता आके किस्से आज भी कर्नाटक के गाँव में लोककथा और लोकगीतों के रूप में खूब चर्चित है। उनकी तूलना एक स्त्री से नहीं अपितु एक वीर योद्धा राजा से की जाती है और वीर पुरुषों से की जाती है। "भले ही चेन्नम्मा आखिरी लड़ाई में हार गई लेकिन उनकी वीरता को हमेशा याद किया जायेगा। उनकी पहली जीत और विरासत का जश्न अब भी मनाया जाता है। हर साल कित्तूर में 22 से 24 अक्तूबर तक कित्तूर उत्सव लगता है जिसमें उनकी जीत का जश्न मनाया जाता है।"4

आजादी के संदर्भ में कन्नड़ के लोकगीतों में 'गी गी' समूह गान का विशेष महत्व है। यह उत्तर कर्नाटक में गाया जाता है। स्वतन्त्रता संग्राम के काल में इसकी रचना शुरू हुई। इन लोकगीतों का वैशिष्ट्य यह है कि इनमें देश भक्ति के गीत भरपूर मात्रा में हैं। गी गी पद के लोकगीत देश के प्रति श्रद्धा, भक्ति और अंग्रेजों के प्रति प्रतिशोध लेने के साहस को बनाए रखने में सहायक थे। उदाहरणार्थ –

"सुष्ठियोल्लणे धन श्रेष्ठागि मेरे युव

गुड्डके होगोडु बा- हा

गुग्दयन् पूजेय माड़ोणु बा

उधो उधो एन्नुत्त हा डोपु बा बा

गी य गी य गीय गीय गी गी....."5

यह गीत कर्नाटक के मैलारलिंगदेवरू के बारे में गाया जाने वाला बहुत ही चर्चित गीगी गीत है। भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में गी-गी पदों ने अपनी अहम भूमिका निभाई है। महात्मा गांधी, सुभाषचंद्र बोस आदि के संदेशों को घर घर में पहुँचने का अद्भुत कार्य गी-गी गीतकार कराते थे। जनमानस में स्वतन्त्रता की अलख गी-गी गीतकारों ने ही जगाया। इनका एक विशेष प्रकार का पोशाक भी होता है। ये सफ़ेद कुर्ता और पाजामा तथा सर पर नेहरू टोपी लगाकर गीत गाते हैं। हर गाने के अंत में गी गी पद का टेर होता है। कर्नाटक के स्वतन्त्रता सेनानियों में 'संगोली रायन्ना' जी का नाम अमर है। उनके संदर्भ में एक लोकगीत निम्नवत है –

"साविरि वोंटी सलगद सरदारा

संगोलि रायन्न बंट बहादूरा।

देशज सलवा कि देह बेट्टू प्राण पंडकिट्टू दुडीदारा

कन्नड़ नाड़िग सलुवागी रायन्ना कत्ती कैयाग हिड़ीदारा

साविरि वोंटी सलगद सरदारा

संगोलि रायन्न बंट बहादूरा ॥" 6

कुरुबा जनजाति में जन्मे संगोली रायन्ना, कित्तूर की रानी चेन्नम्मा के शासनकाल में उनके सहायक थे। ब्रिटीशों के विपरीत रायनना जी ने अपने स्थानीय लोगों को तैयार किया। इसी दौरान आपने एक विशेष प्रकार का युद्ध जिसे 'गेरिल्ला' युद्ध कहते हैं, की भी सीख अपने लोगों को दी। ऐसी मान्यता है कि गेरिल्ला युद्ध में दुश्मनों को गुप्त ढंग से मारने की नीति बनाई गई थी। पेड़ों के ऊपर बैठकर, नदियों के पानी में छिपकर, पर्वतों के ओट में रहकर, कुआं के भीतर छिपकर तथा चारागाह का वेश बनाकर ये जाबाज़, दुश्मनों पर पैनी नजर रखते और सही अवसर मिलते ही उनका खात्मा कर देते। इसी नीति को 'गेरिल्ला युद्ध की नीति' कहा जाता है। रायन्ना ऐसे देशभक्त थे जो अपने पराक्रम से बड़े बड़े योद्धाओं के छक्के छुड़ाते थे। देश की खातिर आप कभी भी प्राणों की परवाह नहीं करते थे और समाज की स्त्रियॉं, वृद्धों तथा बच्चों के लिए आप ईश्वर के समकक्ष थे। इस प्रकार कर्नाटक में हर प्रांत के लोकगीत में देश की आजादी के लिए संघर्षरत योद्धाओं व जाबाजों के संदर्भ में व्यापक जानकारी मिलती है।

"एन्दु मरियलारे महात्मा गांधी निन्ना

हिंदुस्तानद तंदी

सत्य अहिंसा सुत्त राज्येद म्याल

जैभेरी होडिसीदी जगदी

मुरु लोकदल्ली मीरीदंताव नेन्न

सरीय गाड़ेनू गांधी

रायितर सलुवागे हगालुरात्रि नीनू

बिड़उ इल्लदे डूडदी

सत्याग्रहेगड़ा संघकट्टि कोण्डू

आंग्लरनु ओड़ीसीदी

नाल्वत्तेड़ने ईसवी आगस्त हाड़ी नयीदक्का

स्वातंत्रे तंदी जलदी।"7

लोकगीत के इन पंक्तियों का अर्थ है कि – अहिंसा के पुजारी और मानवता के प्रतिमूर्ति गांधी जी कर्नाटक की जनता आपको कभी नहीं भूल सकती क्योंकि अपने बलिदान, त्याग, बुद्धि और नीति के कारण ही आप मात्र हमारे नहीं अपितु समूचे राष्ट्र के पिता हैं। अंगरोजों के खिलाफ युद्ध में आपने जो शस्त्र उठाया उसके समान आज तक कोई भी शस्त्र नहीं बना और वह है - सत्य और अहिंसा। इसके आधार पर सारे वैश्विक पटल पर आपने भारत को पहुंचाया। आपके समकक्ष इस देश में क्या, इस लोक में क्या बल्कि तीनों लोक में कोई भी नहीं ठहरता है। दिन रात एक करके आपने किसानों के लिए काम किया। सत्याग्रहियों का समूह

बनाकर आपने अंग्रेजों को भागा दिया और इतिहास के पृष्ठों पर पंद्रह अगस्त सन उन्नीस सौ सैंतालीस को अमर कर दिया, देश को आजादी दिलाकर। युगों युगों तक आपकी अर्चना हम करते रहेंगे।

गांधी जी के संदर्भ में यह गीत अक्षरश: सत्य है। कर्नाटक राज्य के मंगलूरू शहर में गांधी जी का एक विशेष रूप में निर्मित मंदिर है, जहां दिन में तीन बार – सुबह, दोपहर और शाम को गांधी जी की पूजा होती है। 1948 में यहाँ गांधी जी की एक मिट्टी की मूर्ति स्थापित की गई थी परंतु 2006 में जनता की मांग पर यहाँ संगमरमर की मूर्ति लगाई गई और तीन बार आरती उतारी जाती है। अभिप्राय यह है कि कर्नाटक की जनता गांधी जी को मात्र स्वतंत्रता सेनानी के रूप में नहीं मानती अपितु भगवान का दर्जा देती है। कर्नाटक के लोकगीतों में स्वतन्त्रता सेनानी और उनका परिचयात्मक विवरण सहजता से उपलब्ध हो जाता है जिसके चलते पीढ़ी दर पीढ़ी गीतों के माध्यम से तत्कालीन परिस्थितियों से परिचित होती चलती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1- रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ०- 326

2- यू ट्यूब डॉट कॉम से।

3- यू ट्यूब डॉट कॉम से।

4- नव भारत टाइम डॉट इंडिया टाइम्स डॉट कॉम से

5- सुमित्रा मोतीलाल हलवाई, कर्नाटक के आँगन में महकते लोकगीत और लोकनृत्य, सं०- अमर सिंह वधान, सुनीता शर्मा, पु०- भारतीय लोक साहित्य, पृ०- 471

6- कन्नड़ भाषा के एक प्रोफेसर से वार्तालाप के दौरान गीत सुनकर।

7- यू ट्यूब डॉट कॉम से